17 जनवरी 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जिनवाणी चैनल पर

सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 20 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

इन्टरनेशनल यूथ कन्वेन्शन संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनांक 30 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक चतुर्थ इन्टरनेशनल यूथ कन्वेन्शन का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रतिदिन लगभग 6-6 घंटे '**जैनदृष्टि में तीन लोक**' विषय का प्रोजेक्टर द्वारा बहुत आकर्षक ढंग से प्रस्तुतिकरण किया गया।

इस अवसर पर रत्नत्रय महामंडल विधान का आयोजन पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर के कुशल निर्देशन में हुआ तथा सायंकाल आपके ही द्वारा जिनेन्द्र भक्ति का भी सुन्दर आयोजन हुआ।

दिनांक 31 दिसम्बर को नूतन वर्ष का शुभारंभ रात्रि 12 बजे गुरुदेवश्री के मांगलिक एवं 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' के माध्यम से हुआ। इस प्रसंग पर डॉ. संजीवजी गोधा के मार्मिक उद्‌बोधन का लाभ मिला, साथ ही लगभग 2 घंटे पण्डित विवेकजी के सान्निध्य में विविध आध्यात्मिक पाठ एवं जिनेन्द्र भक्ति का सुन्दर आयोजन हुआ।

संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन एवं कुशल निर्देशन पण्डित देवांग गाला मुम्बई एवं उनकी पूरी टीम द्वारा किया गया।

शिक्षण शिविर संपन्न

दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र पर दिनांक 1 से 8 जनवरी 2017 तक करणानुयोग एवं तत्त्वज्ञान शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उज्ज्वला शहा एवं श्री दिनेशभाई शहा मुम्बई द्वारा तीनों समय कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन की समस्त छात्राओं के अतिरिक्त देश-विदेश से पधारे 200 साधर्मियों ने भी लाभ लिया।

शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री विमलकुमारजी, पृथ्वीचंदजी, अजितप्रसादजी, नरेशजी लुहाड़िया एवं श्री आदीशजी थे। अन्तिम दिन हस्तिनापुर में बन रहे चिदायतन के शिलान्यास महोत्सव की उद्घोषणा सभा हुई, जिसमें श्री पवनजी जैन मंगलायतन एवं पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन आदि लगभग 500 साधर्मीजन उपस्थित थे।

समस्त कार्यक्रम पण्डित राकेशजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर ट्रस्ट के अन्तर्गत अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा खनियांधाना द्वारा आयोजित

51वाँ आध्यात्मिक शिक्षण- प्रशिक्षण शिविर

रविवार, 21 मई से बुधवार 7 जून 2017 तक

कार्यक्रम स्थल -

श्री नन्दीश्वर दिगम्बर जिनमंदिर चेतनबाग, खनियांधाना, जिला शिवपुरी (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र - 9977644295, 8109394378, 9098348737

सभी साधर्मीजन शिविर में पधारकर

अवश्य लाभ लें।

ध्यान रहे !

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर स्थित पंचतीर्थ जिनालय के पंचकल्याणक का पंचम वार्षिकोत्सव रविवार, दिनांक 26 फरवरी से मंगलवार, दिनांक 28 फरवरी 2017 तक आयोजित हो रहा है।

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि –''बालक का मस्तिष्क एक ऐसा कोरा कागज है, जिस पर जो भी सही या गलत प्रारम्भ में लिख दिया जाता है, वह अपनी ऐसी अमिट छाप छोड़ता है कि फिर उसे न तो आसानी से मिटाया जा सकता है, न बदला जा सकता है। बालक को जो प्रारम्भिक जीवन में सिखा दिया जाता है, उसका सरल हृदय उसे ही सच मान लेता है।''

संभवत: इसी तथ्य को ध्यान में रखकर हमारे बुजुर्गों ने बालकों की शिक्षा का प्रारम्भ 'ओम् नम: सिद्धं' से करने का निर्णय लिया होगा। सिद्ध परमात्मा को स्मरण करके बालकों को आध्यात्मिक विद्या सिखाते होंगे। पैंतालीस दिन के बालक को मंदिर में ले जाकर णमोकार महामंत्र सुनाने की परम्परा तो आज भी प्रचलित है।

प्रो. ज्ञान के दादाश्री इस बाल मनोविज्ञान से सुपरिचित थे। अत: उन्होंने अपने पोते ज्ञान को अन्य लौकिक विषय सिखाने-पढाने के पूर्व तत्त्वज्ञान ही सिखाया था। इसकारण दोनों के सोचने के तरीके में जमीन-आसमान का अन्तर आ गया है। एक ही प्रश्न के दोनों के भिन्न-भिन्न उत्तर होते थे। ज्ञान हर बात को तात्विक दृष्टि से सोचता था, उसके सोच में तत्त्वज्ञान झलकता था और विज्ञान सदैव भौतिक दृष्टि से सोचता था।

गत तीन माह से ये ज्ञान और विज्ञान दोनों ही नियमित रूप से उपवन में आचार्यश्री का प्रवचन सुनने पहुँच रहे थे। इसकारण आचार्यश्री इनके आचार-विचार और व्यवहार से तो भलीभांति परिचित हो चुके थे, पर वे चाहते थे कि अन्य लोग भी धार्मिक संस्कारों से होने वाले लाभ तथा संस्कारहीन बालकों की दुर्दशा को जाने और तत्त्वज्ञान के महत्व को पहचाने। एतदर्थ उन्होंने ज्ञान और विज्ञान के संस्कारों के अन्तर को स्पष्ट करने के उद्देश्य से उनसे कुछ प्रश्नोत्तर करने का विचार किया।

एक दिन जब आचार्यश्री ने ज्ञान व विज्ञान को प्रवचन मंडप के सामने बैठा देखा तो उनके माध्यम से सम्पूर्ण धर्मसभा को तत्त्वज्ञान और संस्कारों की उपयोगिता समझाने के उद्देश्य से विज्ञान की ओर हाथ का इशारा करते हुए पूछा –''बताओ तुम कौन हो और तुम्हारा क्या नाम है ? तुम कहाँ रहते हो और तुम्हारा क्या काम है ?''

विज्ञान ने अपने भौतिक चिंतन के अनुसार उत्तर दिया –''मैं जैन हूँ, विज्ञान मेरा नाम है, दिल्ली रहता हूँ और पढना-लिखना तथा वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा नये-नये आविष्कार करना मेरा काम है।''

आचार्यश्री ने यही प्रश्न पुन: ज्ञान की ओर हाथ का इशारा करते हुए पूछा –''तुम बताओ भाई ! तुम कौन हो और तुम्हारा क्या नाम है ? तुम कहाँ रहते हो और तुम्हारा क्या काम है ?

ज्ञान ने अपने तात्विक चिंतन के आधार पर उत्तर दिया – ''वस्तुत: मैं जीवतत्त्व हूँ और शुद्धात्म मेरा नाम है तथा मैं अपने स्वरूप चतुष्टय में रहता हूँ और मात्र जानना मेरा काम है।''

आचार्यश्री ने ज्ञान से ही पुन: प्रश्न किया –''तुमने अपना यह वस्तुगत अलौकिक परिचय क्यो दिया ? व्यक्तिगत लौकिक परिचय क्यों नहीं दिया ? क्या ऐसा परिचय देने से लोग तुम पर हंसेंगे नहीं ?''

ज्ञान ने गंभीर होकर विनम्रता से उत्तर दिया – ''महाराज ! मुझमें आपकी कृपा से इतना विवेक हो गया है कि कहाँ/किसको/क्या उत्तर देना चाहिए, इसकारण मैं हंसी का पात्र नहीं बन सकता।

चूंकि यह प्रश्न एक धर्मगुरु ने प्रवचन के बीच पूछा है। अत: मैंने सोचा –'आपको मुझसे इसी प्रकार के उत्तर की अपेक्षा थी।'

यदि यही प्रश्न मुझसे कॉलेज के प्रोफेसर ने किया होता या इनकमटैक्स ऑफिसर ने किया होता, तो उसे मैं अपना व्यक्तिगत लौकिक परिचय देता। उनसे कहता –'ज्ञान मेरा नाम है, दिल्ली में मेरा धाम है, मैं प्रोफेसर हूँ और पढाना-लिखाना मेरा काम है।'

पर यह परिचय तो केवल लोक में कामचलाऊ परिचय है, कदम-कदम पर झूठा पड़ने वाला परिचय है; क्योंकि लोकव्यवहार में केवल एक नाम से काम नहीं चलता, यहाँ तो क्षण-क्षण में और कदम-कदम पर नाम, काम, धाम और व्यक्तित्व बदलते रहते हैं।

देखिये न ! मैं कौन हूँ। इस प्रश्न के कितने उत्तर हो सकते हैं। मैं भारतीय हूँ, हिन्दी भाषी हूँ, मैं मनुष्य हूँ, मैं जैन हूँ, मैं प्रोफेसर हूँ, मैं विद्यार्थी हूँ, मैं आत्मार्थी हूँ, मैं बाप भी हूँ, बेटा भी हूँ, शिष्य भी हूँ, गुरु भी हूँ, भाई भी हूँ, भतीजा भी हूँ, भानजा भी हूँ, मामा भी हूँ आदि-आदि। जितने रिश्ते हैं, लोक व्यवहार में मैं वह सब हूँ।

(क्रमश:)

स्वर्ण जयंती के मायने (17)
आध्यात्मिक शिक्षण सर्वोत्तम कार्य : क्यों ?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त हम सभी लोग अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्य भी करना चाहते हैं, जो हमारी अपनों की एवं परिवार की सीमाओं से ऊपर उठकर देश और समाज के विकास में योगदान कर सके, ऐसे कार्यों को हम परोपकार, समाजसेवा या देशसेवा नाम भी दे देते हैं।

यदि हम भी अपने जीवन में ऐसा कुछ कार्य करना चाहते हैं तो हमें क्या करना चाहिये ?

निश्चित ही **हम ऐसा कोई कार्य करना चाहेंगे जो सबसे अधिक उपयोगी हो, सार्वभौमिक व दीर्घकालिक प्रभाव वाला हो और कम से कम करके अधिक से अधिक फलदायी हो।**

ऐसा कौनसा कार्य हो सकता है ?

शिक्षा एक ऐसा ही सर्वोत्कृष्ट कार्य है।

क्यों ?

क्योंकि –

शिक्षा का कार्य लाभान्वित होने वालों की संख्या तथा देश और काल की सीमाओं से परे है।

ज्ञानदान देने वाला **एक शिक्षक एक साथ असंख्यात लोगों को शिक्षित कर सकता है,** धन का दान देने वाला दानवीर मात्र कुछ ही लोगों की सहायता कर सकता है।

इतना ही नहीं, किसी को शिक्षित करने के लिये **यह भी आवश्यक नहीं कि शिष्य गुरु के निकट ही हो या समकालीन ही हो। क्षेत्र और काल से दूर लोगों को भी प्रभावशाली ढंग से शिक्षित किया जा सकता है।**

एक उदाहरण से यह बात एकदम स्पष्ट हो जायेगी – यदि कोई लेखक एक पुस्तक लिखता है या अपने उपदेशों की रिकॉर्डिंग कर देता है तो क्षेत्र से दूर बैठे लोग और आगामी पीढियों के लोग भी उससे शिक्षा पाकर लाभान्वित हो सकते हैं।

शिक्षण एक ऐसा चमत्कारी कार्य है कि लाखों लोगों को बहुत कुछ मिल जाता है; पर शिक्षक का अपना कोई नुकसान नहीं, उसका कुछ भी घटता नहीं है। यदि कोई किसी को 100 रुपये देकर उसकी आर्थिक मदद करता है तो उसके पास उपलब्ध धन में से 100 रुपये कम हो ही जाते हैं।

किसी के पास कितना भी धन क्यों न हो, कभी न कभी तो ऐसा समय आयेगा ही कि उसके पास किसी को देने के लिये कुछ नहीं बचेगा।

फिर किसी को दिया गया धन आखिर उसके पास भी कब तक टिकेगा ? कभी तो खत्म होगा ही न ?

इसी प्रकार यदि कोई भूखे को भोजन करवाना चाहे तो आखिर कितनों का पेट भर सकेगा ? कोई तो सीमा होगी न ? किसी की कुछ अधिक और किसी की बहुत कम। **शिक्षा के क्षेत्र में कोई सीमा नहीं।**

शिक्षा का प्रभाव दीर्घकालीन होता है, किसी को शिक्षित किये जाने पर वह शिक्षा सदा उसके साथ रहेगी, जीवनभर उस शिक्षा का प्रभाव उसके ऊपर रहेगा; पर भूखे को भोजन करवाने का प्रभाव आखिर कब तक रहेगा ? मात्र कुछ घंटों में वे फिर भूखे हो जायेंगे।

दानवीर को **दान देने के लिये प्रतिदिन नया धन चाहिये,** भोजन कराने वाले को प्रतिदिन नया भोजन चाहिये; पर **शिक्षक अपनी एक ही शिक्षा का ज्ञानदान प्रतिदिन कर सकता है, अनंतकाल तक, न तो उसका कुछ घटता है और न ही चुकता है।**

इसीप्रकार हम कितनों की चिकित्सा कर या करवा सकते हैं और कितनों को उनकी सुरक्षा की गारंटी दे सकते हैं ?

इसीप्रकार हम कितनों की चिकित्सा कर या करवा सकते हैं और कितनों को उनकी सुरक्षा की गारंटी दे सकते हैं ?

इसप्रकार हम पाते हैं कि **शिक्षा का दान (ज्ञानदान) सबसे अच्छा, सबसे बड़ा, सबसे लाभदायक और सबसे अधिक प्रभावशाली कार्य (दान) है। धनदान से या भोजनदान से कई गुना।**

शिक्षा के क्षेत्र में भी धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रभावशाली और दूरगामी प्रभाव वाली है; क्योंकि किसी भी प्रकार की लौकिक शिक्षा मात्र एक जीवन में ही कार्यकारी होती है और जीवन के अंत के साथ ही उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है; पर धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा और तद्जनित संस्कार सदा साथ रहते हैं, इस जीवन के बाद भी मुक्ति पाने (मोक्ष जाने) तक।

अन्य शिक्षाएं जहाँ एक ओर संसार बढाने का कार्य करती है, आध्यात्मिक शिक्षा संसार से मुक्ति दिलाने में सहायक होती है।

इसप्रकार हम पाते हैं कि **आध्यात्मिक शिक्षण का कार्य इस जगत में सबसे महानतम कार्य है।**

यदि कोई व्यक्ति स्वयं यह कार्य नहीं कर सकता है तो वह ऐसे कार्य करने वालों की मदद तो कर ही सकता है न।

यदि ऐसा भी न किया जा सके तो कम से कम अन्य लोगों को इस कार्य के लिये प्रेरित तो किया ही जा सकता है, उनकी अनुमोदना तो की ही जा सकती है, यदि अनुमोदना भी न कर सके तो कम से कम विरोध करने से तो बच ही सकते हैं न। विरोध करने वालों को हतोत्साहित तो कर सकते हैं न ?

यह **सहायता तन, मन और धन तीनों प्रकार से की जा सकती है।**

यदि हम **श्रमदान** करना चाहते हैं तो आध्यात्मिक शिक्षण की व्यवस्था के लिये करें, यदि हम अनुमोदना व समर्थन के जरिये किसी को प्रोत्साहित करना चाहते हैं तो **अध्यात्म पढने-पढाने वालों का समर्थन करें** और यदि हम धन दान करना चाहते हैं तो आध्यात्मिक शिक्षण के कार्य के लिये दें।

हम यदि गौर करें तो पायेंगे कि मात्र आध्यात्मिक शिक्षण ही एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें सभी के योगदान की आवश्यकता है; **क्योंकि मात्र यही वह कार्य है, जिसकी आवश्यकता सभी के लिये है, जो सबके लिये उपयोगी व कल्याणकारी है।**

दुनिया के बहुतायत लोगों के लिये दिन में दो बार भोजन जुटाना असंभव नहीं है, अधिसंख्य लोगों को तो यह सहज ही उपलब्ध है। किन्हीं लोगों के लिये हालात चाहे कितने भी विपरीत क्यों न हों पर **अंततः दुनिया में भूखा कोई नहीं सोता है, सभी के भोजन का कोई न कोई इंतजाम हो ही जाता है; क्योंकि भोजन के लिये प्रत्येक व्यक्ति स्वयं व्यक्तिगत स्तर पर हर संभव प्रयास/पुरुषार्थ करता है।**

बीमारी की स्थिति में भी प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर स्वस्थ होने के लिये हर संभव प्रयत्न करता है व कोई न कोई मार्ग खोज ही लेता है, हर व्यक्ति किसी न किसी तरह अपना तन भी ढंक लेता है और अपना आशियाना (घर) भी बना ही लेता है और कहीं नहीं तो फुटपाथ पर ही सही।

स्वयं के अतिरिक्त समाज और सरकार भी उक्त सभी कार्यों के लिये मदद करती है; क्योंकि सभी के लिये भोजन, वस्त्र, आवास व स्वास्थ्य (चिकित्सा) उपलब्ध करवाना सरकार की जिम्मेदारी भी है।

लौकिक शिक्षा की व्यवस्था भी सरकार तो करती ही है, साथ ही समाज भी इसमें सहयोग करती है और कुछ लोग व्यावसायिक तौर पर भी यह कार्य करते ही हैं।

मात्र आध्यात्मिक शिक्षण ही एक ऐसा कार्य है जो सरकारें नहीं करती हैं और बहुतायत लोग स्वयं भी अपने जीवन में न इसकी कमी महसूस कर पाते हैं और न ही आवश्यकता महसूस करते हैं; क्योंकि इसके बिना उन्हें ऊपरी तौर पर (भौतिक रूप से) अपने जीवन में कोई कमी या अधूरापन दिखाई नहीं देता है। इसके बिना भूख या बीमारी जैसी पीड़ा भी तो नहीं होती है न !

अत्यन्त महत्वपूर्ण व आवश्यक होने पर भी जो कार्य अत्यंत उपेक्षित है, उसी में हमारा और आपका योगदान सबसे अधिक आवश्यक है और सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, **यही एकमात्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण ऐसा कार्य है जो तीर्थंकर और गणधर आदिक भी करते हैं।**

बस इसीलिये हम/पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट मात्र इसी कार्य के लिये समर्पित हैं।

आइये ! हम सभी मिलकर इस कार्य में जुट जाएं। •

चतुर्थ वार्षिक महोत्सव संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 6 से 8 जनवरी तक सीमंधर जिनालय का चतुर्थ वार्षिक महोत्सव श्री सिद्धपरमेष्ठी विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर व पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। पण्डित संजयजी द्वारा संगीतमय जैनकथा का आयोजन भी हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा संपन्न हुये। अन्तिम दिन मंदिर के पास ही खरीदे नवीन भूखंड पर संस्कार भवन का शिलान्यास श्री महाचंदजी प्रकाशचंदजी सेठी परिवार भीलवाड़ा द्वारा विधि-विधानपूर्वक पण्डित संजयजी के निर्देशन में संपन्न हुआ। त्रिदिवसीय यह महोत्सव श्री सुखमालजी चौधरी एवं श्री अशोकजी सेठी के निर्देशन में संपन्न हुआ।

आगामी कार्यक्रम ...

हस्तिनापुर में पत्र सम्पादक सम्मेलन

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के तत्त्वावधान में पौराणिक नगरी हस्तिनापुर में दिनांक 12 फरवरी 2017 को जैन पत्र सम्पादकों का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। समारोह की अध्यक्षता श्री रवीन्द्र मालव करेंगे।

समारोह के मुख्य अतिथि तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल तथा विशिष्ट अतिथि स्वदेशभूषण जैन (पंजाब केसरी) दिल्ली होंगे। कार्यक्रम में अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ से जुड़े अनेक सम्पादक भाग लेंगे तथा हस्तिनापुर की गौरव गाथा पर चर्चा करेंगे।

स्मरणीय है कि 11 से 13 फरवरी 2017 तक इस ऐतिहासिक स्थली पर तीर्थधाम चिदायतन का शिलान्यास महोत्सव भी आयोजित है, जिसकी विशेष तैयारियां चल रही हैं। मुमुक्षु समाज द्वारा संचालित तीर्थों में अब हस्तिनापुर की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

सम्पादक सम्मेलन के संयोजक संगठन के कार्याध्यक्ष अखिल बंसल हैं, विशेष जानकारी हेतु 9929655786 एवं वॉट्सअप पर संपर्क करें।

आवास, भोजन एवं तीर्थभ्रमण की समुचित व्यवस्था है।

शोक समाचार

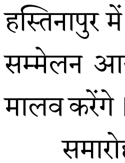

महिदपुर सिटी-उज्जैन (म.प्र.) निवासी पण्डित शांतिलाल सौगानी की धर्मपत्नी **श्रीमती कमलाबाई सौगानी** का 81 वर्ष की आयु में दिनांक 28 नवम्बर 2016 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी, धर्मपरायण व सरल महिला थीं।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

सिद्धचक्र मंडल विधान संपन्न

(1) जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर की सत्रहवीं वर्षगांठ पर दिनांक 25 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक श्री सिद्धचक्र मंडल विधान आयोजित हुआ, जिसके आयोजनकर्त्ता श्रीमती पुष्पा जैन धर्मपत्नी स्व.पण्डित ज्ञानचंदजी परिवार थे।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में स्थानीय विद्वान पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी, पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित अभिनयजी शास्त्री, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री के व्याख्यानों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित हुये।

कार्यक्रम में करेली, जबेरा, बिलासपुर, बरगी आदि स्थानों से अनेक साधर्मीजन पधारे।

विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी के सान्निध्य में पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित विरागजी, पण्डित अभिनयजी आदि के सहयोग से संपन्न हुये। कार्यक्रम में वीतराग-विज्ञान पाठशाला, चेतना मंडल एवं फैडरेशन के सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा।

(2) नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर की 25वीं रजत जयंती वर्षगांठ एवं श्री पंचबालयति वेदी की द्वितीय वर्षगांठ के अवसर पर श्री मोदी परिवार द्वारा सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अहिंसा भवन में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही डॉ.राकेशजी शास्त्री द्वारा दोनों समय जयमाला का विशेष स्पष्टीकरण किया गया। रात्रि में विभिन्न ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी जैन, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, पण्डित भूषणजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी महाजन, पण्डित वीतरागजी शास्त्री आदि के सहयोग से संपन्न हुये। अन्तिम दिन जिनेन्द्र शोभायात्रा भी निकाली गई।

समस्त कार्यक्रमों का संयोजन श्री अखिल भारतीय जैन युवा महिला फैडरेशन एवं श्री महावीर विद्या निकेतन द्वारा किया गया।

– भूषण शास्त्री (प्रचार मंत्री), नागपुर

(3) गढाकोटा (म.प्र.) : यहाँ पंचकल्याणक की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 25 से 30 दिसम्बर 2016 तक श्री सिद्धचक्र मंडल विधान आयोजित हुआ।

इस अवसर पर पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा द्वारा समयसार कलश पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. नन्हे भैया द्वारा संपन्न हुये।

शीतकालीन शिक्षण शिविर संपन्न

तिरुवण्णामलै (तमिलनाडु) : यहाँ वंदवासी के निकट कील सात्तमंगलम श्री चन्द्रप्रभ जैन मंदिर ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र व आचार्य कुन्दकुन्द तत्त्वप्रचार केन्द्र, पोन्नूर हिल के द्वारा उपर्युक्त गाँव में दिनांक 30 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक शीतकालीन जैन धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यह गाँव का पहला एवं कुन्दकुन्द केन्द्र का 66वाँ शिविर है।

शिविर में कक्षाओं, प्रवचनों एवं अन्य गतिविधियों का संचालन श्री जम्बूकुमारजी शास्त्री, डॉ. उमापति जैन शास्त्री, श्री अशोककुमारजी शास्त्री, श्री जयराजनजी शास्त्री, श्री नाभिराजजी शास्त्री, श्री सुरेशजी शास्त्री, श्री जिनकुमारजी शास्त्री आदि ने किया। शिविर में जिनेन्द्र पूजन, शास्त्रचर्चा, प्रश्नमंच, भक्ति आदि कार्यक्रम भी हुये।

इस तीन दिवसीय शिक्षण शिविर में बालबोध पाठमाला की कक्षाएँ ली गईं। शिविर के आयोजन में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र के ट्रस्टी श्री अनंतरायजी, श्री सी एस पी जैन एवं स्थानीय महानुभाव श्री धरणेन्द्रदासजी का भी तन-मन-धन से सहयोग रहा।

इस अवसर पर आधुनिक तकनीक के रूप में कम्प्यूटर पॉवर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन की विधि भी अपनाई गई। शिविर के अंतिम दिन परीक्षा आयोजित करके विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। शिविर में बालकों एवं युवाओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। **– डॉ. बी उमापति जैन**

करणानुयोग शिविर संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ मोदीजी की नसियां में श्री विमलचंद माणकचंद जैन पारमार्थिक न्यास द्वारा दिनांक 23 दिसम्बर 2016 से 1 जनवरी 2017 तक गोम्मटसार जीवकांड के आधार पर करणानुयोग शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा, पण्डित विकासजी छाबड़ा एवं श्रीमती सारिका छाबड़ा की कक्षाओं का लाभ मिला।

डॉ. जिनेन्द्र युवा बोर्ड के सदस्य मनोनीत

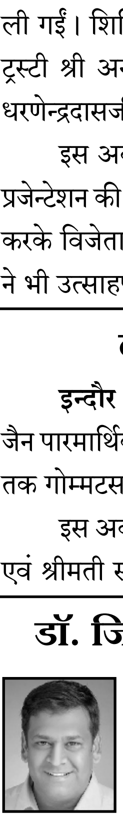

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष एवं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर को राजस्थान सरकार द्वारा युवा बोर्ड का सदस्य मनोनीत किया गया है। युवा बोर्ड के सदस्य सचिव युवा समन्वयक, नेहरू युवा केन्द्र उदयपुर भी रहेंगे। ज्ञातव्य है कि डॉ. जिनेन्द्र उदयपुर के विधायक प्रतिनिधि के रूप में फतह उच्च माध्यमिक विद्यालय की विकास समिति एवं छात्र निधि कोष के भी सदस्य हैं तथा भाजपा शहर जिले के मंत्री भी हैं। डॉ. शास्त्री ने टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के साहित्य के दार्शनिक एवं सांस्कृतिक विषय पर शोधकार्य भी किया है। यह जानकारी उदयपुर अतिरिक्त जिला कलक्टर ओ.पी. बुनकर ने दी।

युवा फैडरेशन एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारला, मुम्बई द्वारा

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द –कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

विद्यार्थी गृह की विशेषतायें

- गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक श्री महावीर चारित्र कल्याण रत्न आश्रम में लौकिक अध्यापन
- पूज्य गुरूदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर
- छठवीं से दसवीं तक की अध्यापन सुविधा
- लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार
- समय–समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम
- सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल
- शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान
- सभी सुविधायें पूर्णत: नि:शुल्क

- लगभग सभी खेलों की सुविधा
- धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन
- वर्ष में दो बार शैक्षणिक तीर्थ यात्रा
- विशाल पुस्तकालय की सुविधा
- कठिन विषयों की विशेष कक्षायें
- साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास

प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 20 मार्च 2017 / प्रवेश पात्रता शिविर 19 अप्रेल से 22 अप्रेल 2017

संपर्क : श्री कहान शिशु विहार, राजकोट रोड, सोनगढ़ जि. भावनगर सौराष्ट्र गुजरात

फोन : 02846 244510, सोनू शास्त्री : 9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री : 7405439519 विराग शास्त्री : 9300642434

आप प्रवेश फार्म हमारी बेवसाइट www.vitragvani.com से भी डाउनलोड कर सकते हैं। email:-kahanshishuvihar@gmail.com

---

अवश्य पधारिये महामुनिराज आचार्य कुन्दकुन्द देव की तपोभूमि पोन्नूर मलै में आयोजित **तपोभूमि पोन्नूर**

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

मंगलवार, 21 फरवरी से रविवार, 26 फरवरी 2017

विद्वत् सान्निध्य : पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली ❁ प्रो. डॉ. सुदीप कुमार जी दिल्ली ❁ डॉ. राकेश शास्त्री, नागपुर

विशेष आकर्षण :– ◆ आचार्य कुन्दकुन्द की तपो एवं विदेह गमन भूमि पोन्नूर एवं आसपास के अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन ◆सीमन्धर भगवान के मनोहारी दर्शन एवं पूजन विधान का मधर आयोजन प्राकृतिक एवं शांत वातावरण में जिनवाणी की अमृत देशना ◆ पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन एवं उसके रहस्यों का लाभ ◆ अन्य समागत विद्वानों का प्रासंगिक लाभ

संयोजक – विराग शास्त्री, जबलपुर मो. 9300642434, email: kahansandesh@gmail.com

कार्यक्रम स्थल : आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर, कुन्दकुन्द नगर, पोन्नूर मलै तह. वन्देवासी, वडक्कमवाडी जि. तिरुवण्णामलै 604505

निवेदक : श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले मुम्बई

विशेष : इस शिविर में सहभागिता करने के इच्छुक साधर्मी संयोजक से सम्पर्क करें। स्थान सीमित होने से सीमित साधर्मियों को पहले आओ–पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। कार्यक्रम 21 फरवरी को दोपहर से प्रारम्भ होगा।

पोन्नूर चेन्नई से 180 किमी, बैंगलोर से 360 किमी, पाण्डिचेरी से 88 किमी, वन्दवासी से 8 किमी, चेटपुट से 20 किमी की दूरी पर स्थित है। चेन्नई के कोयम्बडु बस स्टेण्ड से पोन्नूर के लिये सरकारी बस क्रमांक 104, 130, 148, 208, 422 उपलब्ध रहती हैं।

पोन्नूर आवागमन के सम्बन्ध में आप निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें –

पोन्नूरमलै – 04183–291136, 321520, मो. 09976975074 चेन्नई सम्पर्क – श्री दीपक कामदार : 09383370033

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में सातवें अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं। जो भी भाई-बहिन इस योजना से जुड़ना चाहते हैं, वे 09785643202 पर संपर्क करें।

प्रश्न : सातवें अध्याय में किस मिथ्यात्व का निरूपण है और क्यों ?

उत्तर : सातवें अध्याय में गृहीत मिथ्यात्व का निरूपण है; क्योंकि जैनशास्त्रों को पढकर उसकी विवक्षा नहीं समझने के कारण ये मिथ्यात्व के प्रकार बनते हैं। इसप्रकार शास्त्र के आधार से नया ग्रहण किया होने से इसे गृहीत मिथ्यात्व कहा है।

प्रश्न : सातवें अध्याय में सूक्ष्म मिथ्यात्व का वर्णन है। यहाँ सूक्ष्म से क्या आशय है ?

उत्तर : सातवें अध्याय में जिस मिथ्यात्व का वर्णन है, वह स्थूल रूप से नहीं दिखाई देता है (जिसप्रकार स्थूल गृहीत मिथ्यात्व दिखाई देता है) स्वयं को भी आसानी से समझ में नहीं आता, अपितु मैं धर्म कर रहा हूँ - इसप्रकार भ्रम हो जाता है; अत: सातवें अध्याय में वर्णित मिथ्यात्व को सूक्ष्म मिथ्यात्व कहा।

प्रश्न : सातवें अध्याय में कितने प्रकार के मिथ्यादृष्टियों का वर्णन है?

उत्तर : निश्चयाभासी, व्यवहाराभासी, उभयाभासी, सम्यक्त्व सन्मुख - इसप्रकार 4 प्रकार के मिथ्यादृष्टियों का वर्णन किया गया है।

प्रश्न : निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप बताइये।

उत्तर : जो जीव निश्चय को ना जानते हुए निश्चय नय के एकान्त को ग्रहण करते हैं, वे निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि हैं।

प्रश्न : निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि का लक्षण बताइये।

उत्तर : निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि अपने को सिद्ध समान अनुभव करते हैं, केवलज्ञान का सद्भाव मानते हैं, रागादि भाव प्रत्यक्ष होने पर भी भ्रम से आत्मा को रागादि से रहित मानते हैं।

इसप्रकार पर्याय में केवलज्ञानादि का अभाव होने पर भी उसका सद्भाव मानते हैं और रागादिक होने पर भी उनका अभाव मानते हैं।

प्रश्न : शास्त्रों में आत्मा को सिद्ध समान शुद्ध और केवलज्ञानी रागादि रहित कहा गया है, तब निश्चयाभासी अपने को ऐसा मानता है, इसमें क्या दोष है ?

उत्तर : शास्त्रों में आत्मा को सिद्ध समान शुद्ध और केवलज्ञानी रागादि से रहित जो कहा गया है वह स्वभाव की अपेक्षा से कहा गया है; परन्तु निश्चयाभासी इस विवक्षा को न समझकर पर्याय अपेक्षा अपने को ऐसा मानकर स्वच्छंद वर्तता है (जबकि ऐसा नहीं है); यही निश्चयाभास है।

प्रश्न : निश्चयाभासी की स्वच्छन्दता के 5 बिन्दु बताइये।

उत्तर : (1) शास्त्राभ्यास करना निरर्थक बतलाता है।

(2) द्रव्यादिक, गुणस्थान मार्गणास्थान, त्रिलोकादि के विचार को विकल्प ठहराता है।

(3) तपश्चरण करने को वृथा क्लेश करना मानता है।

(4) व्रतादि धारण करने को बंधन में पड़ना ठहराता है।

(5) पूजनादिक कार्यों को शुभास्रव जानकर हेय ठहराता है।

प्रश्न : शास्त्राभ्यास की उपयोगिता सिद्ध करने के संदर्भ में ग्रन्थानुसार तर्क प्रस्तुत कीजिये।

उत्तर : यदि शास्त्राभ्यास निरर्थक हो तो मुनियों के भी तो ध्यान और अध्ययन दो ही कार्य मुख्य हैं। ध्यान में उपयोग न लगे तब अध्ययन ही में उपयोग को लगाते हैं, बीच में अन्य स्थान उपयोग लगाने योग्य नहीं है तथा शास्त्राभ्यास द्वारा तत्त्वों को विशेष जानने से सम्यग्दर्शन-ज्ञान निर्मल होता है तथा वहाँ जब तक उपयोग रहे तब तक कषाय मन्द रहे और आगामी वीतरागभावों की वृद्धि हो। ऐसे कार्यों को निरर्थक कैसे मानें ?

प्रश्न : 'हमें अध्यात्म शास्त्रों को पढना चाहिये अन्य शास्त्र नहीं' - निश्चयाभासी के इस कथन की समीक्षा करें।

उत्तर : यदि सच्ची दृष्टि हुई है तो सभी जैनशास्त्र कार्यकारी हैं। अध्यात्म-शास्त्रों में तो आत्मस्वरूप का मुख्य कथन है; सो सम्यग्दृष्टि होने पर आत्मस्वरूप का निर्णय तो हो चुका, तब तो ज्ञान की निर्मलता के अर्थ व उपयोग को मन्दकषायरूप रखने के अर्थ अन्य शास्त्रों का अभ्यास मुख्य चाहिये। तथा आत्मस्वरूप का निर्णय हुआ है, उसे स्पष्ट रखने के अर्थ अध्यात्म-शास्त्रों का भी अभ्यास चाहिये; परन्तु अन्य शास्त्रों में अरुचि तो नहीं होनी चाहिये। जिसको अन्य शास्त्रों की अरुचि है उसे अध्यात्म की रुचि सच्ची नहीं है।

जैसे जिसके विषयासक्तपना हो वह विषयासक्त पुरुषों की कथा भी रुचिपूर्वक सुने व विषय के विशेष को भी जाने व विषय के आचरण में जो साधन हों उन्हें भी हितरूप माने व विषय के स्वरूप को भी पहिचाने; उसी प्रकार जिसके आत्मरुचि हुई हो वह आत्मरुचि के धारक तीर्थंकरादि के पुराणों को भी जाने तथा आत्मा के विशेष जानने के लिये गुणस्थानादिक को भी जाने तथा आत्म आचरण में जो व्रतादिक साधन हैं उनको भी हितरूप माने तथा आत्मा के स्वरूप को भी पहिचाने। इसलिये चारों ही अनुयोग कार्यकारी हैं।

प्रश्न : पूजनादि कार्यों को शुभास्रव जानकर हेय ठहराता है, इस बिन्दु के संदर्भ में ग्रन्थानुसार विचार रखें।

उत्तर : वह पूजनादिक कार्य को शुभास्रव जानकर हेय मानता है, सो यह सत्य ही है; परन्तु यदि इन कार्यों को छोड़कर शुद्धोपयोगरूप हो तो भला ही है, और विषय कषायरूप अशुभरूप प्रवर्ते तो अपना बुरा ही किया।

शुभोपयोग से स्वर्गादि हों अथवा भली वासना से या भले निमित्त से

कर्म के स्थिति-अनुभाग घट जायें तो सम्यक्त्वादि की भी प्राप्ति हो जाये और अशुभोपयोग से नरक निगोदादि हों अथवा बुरी वासना से या बुरे निमित्त से कर्म के स्थिति-अनुभाग बढ जायें तो सम्यक्त्वादिक महादुर्लभ हो जायें।

तथा शुभोपयोग होने से कषाय मन्द होती है और अशुभोपयोग होने से तीव्र होती है, सो मन्दकषाय का कार्य छोड़कर तीव्रकषाय का कार्य करना तो ऐसा है जैसे कड़वी वस्तु न खाना और विष खाना। सो यह अज्ञानता है।

तथा शुभ-अशुभ का परस्पर विचार करें तो शुभभावों में कषाय मन्द होती है, इसलिये बन्धहीन होता है; अशुभभावों में कषाय तीव्र होती है, इसलिये बन्ध बहुत होता है। इसप्रकार विचार करने पर अशुभ की अपेक्षा सिद्धान्त में शुभ को भला भी कहा जाता है। जैसे-रोग तो थोड़ा या बहुत बुरा ही है; परन्तु बहुत रोग की अपेक्षा थोड़े रोग को भला भी कहते हैं।

इसलिये शुद्धोपयोग न हो, तब अशुभ से छूटकर शुभ में प्रवर्तना योग्य है; शुभ को छोड़कर अशुभ में प्रवर्तना योग्य नहीं है।

प्रश्न : केवल निश्चयाभास के अवलम्बी जीव की प्रवृत्ति का निरूपण ग्रन्थानुसार करें।

उत्तर : निश्चय नय का अवलम्बी कदाचित् मैं ज्ञानी हूँ मुझे कुछ अन्य नहीं चाहिये - ऐसा मानकर ध्यानमुद्रा धारण कर मैं शुद्ध हूँ ऐसा विचार कर संतुष्ट होता है। कदाचित् ज्ञानी को आस्रव बंध नहीं होता ऐसा मानकर स्वच्छन्द होकर रागादिरूप प्रवर्तता है।

कितने ही जीव अशुभ में क्लेश मानकर व्यापार/स्त्री सेवन आदि कार्यों को घटाते हैं तथा शुभ को हेय जानकर शास्त्राभ्यासादि कार्यों में भी नहीं प्रवर्तते। शुद्धोपयोग की प्राप्ति नहीं हुई है अत: वे जीव अर्थ, काम, धर्म, मोक्ष रूप पुरूषार्थ से रहित होते हुए आलसी निरुद्यमी होते हैं।

प्रश्न : निश्चयाभासी प्रकरण के संदर्भ में ग्रन्थानुसार निर्विकल्प/सविकल्प दशा का वर्णन कीजिये।

उत्तर : राग-द्वेषवश किसी ज्ञेय को जानने में उपयोग लगाना और किसी ज्ञेय के जानने से छुड़ाना - इसप्रकार बारम्बार उपयोग का भ्रमाना उसका नाम विकल्प है।

तथा जहाँ वीतरागरूप होकर जिसे जानते हैं यथार्थ जानते हैं। अन्य-अन्य ज्ञेय को जानने के अर्थ उपयोग को भ्रमाते नहीं हैं, वहाँ निर्विकल्प दशा जानना।

- संयोजक, पीयूष जैन, जयपुर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

स्मृति ग्रन्थ हेतु सामग्री प्रेषित करें

सभी मुमुक्षु मण्डलों व साधर्मीजनों से निवेदन है कि प्रसिद्ध जैन विद्वान बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के स्मृति ग्रंथ हेतु उनके संस्मरण, फोटोज़, रेखाचित्र, हस्तलिखित सामग्री, स्मृतिचिह्न, विशेष व्याख्यानों के टेप, प्रकाशित लेख-कविता-पुस्तक आदि महत्वपूर्ण सामग्री यथाशीघ्र प्रेषित करें। यह सामग्री आपके नामोल्लेखपूर्वक ही प्रकाशित होगी। जिन महानुभावों/संस्थाओं ने युगलजी की उपस्थिति में या उनके देहवियोग के उपरान्त विशेषांक/स्मृति अंक आदि कुछ भी प्रकाशित किये हैं,उनकी भी एक-एक प्रति प्रेषित करें। उनका विवरण भी प्रकाशित किया जायेगा।

सामग्री भेजने का पता - प्रो.सुदीप कुमार जैन, बी-32, छतरपुर एक्सटेंशन, नंदा हॉस्पिटल के पीछे, नई दिल्ली-110074

मो.नं.- 09810660657, 08750332266

Email : skjainlbs@yahoo.co.in; chinmay85@yahoo.co.in

विशेष निवेदन - जो भी सामग्री ईमेल द्वारा भेजी जाये, उसकी हस्ताक्षरित प्रति भी डाक (स्पीड पोस्ट) द्वारा अवश्य भेजी जाये।

तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधान संपन्न

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ सावरकर कॉलोनी स्थित श्री वासुपूज्य जिनालय में जिनमंदिर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 6 से 9 जनवरी तक श्रीमती रचना-नवीन जैन परिवार द्वारा श्री तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधान संपन्न हुआ। ध्वजारोहण श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित विरागजी शास्त्री, ब्र. सुनीलजी शास्त्री आदि के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा संपन्न हुए।

प्रकाशन तिथि : 13 जनवरी 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com